अमरीकी झंडा बनाने वाली

बैट्सी रॉस

अमरीकी झंडा बनाने वाली

बैट्सी रॉस

एलिज़ाबैथ ग्रिस्कॉम का जन्म 1 जनवरी 1752 के दिन फिलडैल्फिया, पैनसिल्वैनिया में हुआ था. एलिज़ाबैथ, जिसे उसके परिवार के लोग बैट्सी बुलाते थे, सैमुयल और रैबेक्का की सत्रह संतानों में से आठवीं संतान थी. उसका परिवार क्वेकर संप्रदाय से संबंधित था, एक ऐसा संप्रदाय जो सादा, शांत जीवन जीने में विश्वास रखता था. यह परिवार इतना बड़ा था कि घर के कामकाज में बच्चों को भी माता-पिता की सहायता करनी पड़ती था. क्वेकर लड़कियाँ जो सफेद टोपियाँ पहनती हैं, वह टोपियाँ सिल कर बैट्सी भी परिवार की सहायता करती थी.

अन्य क्वेकर और धनी परिवारों के बच्चों के साथ बैट्सी भी 'फ्रेंड्स स्कूल' पढ़ने जाती थी. उस स्कूल में पढ़ने, लिखने, अंकगणित, भूगोल और इतिहास सीखने के साथ-साथ छात्रों को हर दिन चार घंटे कोई कार्य करना होता था. बैट्सी सिलाई का कार्य करती थी. बैट्सी को रज़ाइयाँ और कढ़ाई के जटिल नमूने बनाना बहुत अच्छा लगता था. उसकी सिलाई-कढ़ाई फिलडैल्फिया में सबसे सुंदर थी और इसके लिए उसे कई पुरस्कार भी मिले थे.

जब बैट्सी किशोर अवस्था की हुई तो उसने माता-पिता से विनती की कि उसे घर से बाहर काम करने की अनुमति दी जाए. एक सोफ़ासाज़ के पास काम करने की अनुमति उसे मिल गई. वहाँ वह सोफ़ा और कुर्सियों और अन्य फर्नीचर की गद्दियों और आवरण की सिलाई करती. उसी दूकान में उसकी भेंट जॉन रॉस से हुई और दोनों एक-दूसरे से प्यार करने लगे थे, बैट्सी ने 1773 में उससे विवाह कर लिया, यद्यपि कि वह क्वेकर न था. क्वेकर संप्रदाय से बाहर किसी व्यक्ति से उसका विवाह करना उसके परिवार को अच्छा न लगा.

उस समय के अमरीका में पूर्वी तट पर स्थित सिर्फ तेरह उपनिवेश बस्तियाँ ही थीं, जिन पर इंगलैंड के सम्राट जॉर्ज III शासन करते थे. अमरीका की इन तेरह बस्तियों में रहने वाले उपनिवेशी अंग्रेज़ों के शासन के अधीन रहना न चाहते थे. उन्होंने 1775 में अपनी सरकार बना ली. नई सरकार ने अंग्रेज़ों के साथ लड़ने के लिए एक सेना का भी गठन किया. इस सेना ने अंग्रेज़ों के साथ अपनी पहली लड़ाइयाँ 19 अप्रैल 1775 के दिन लेक्सिंगटन और कनकॉर्ड, मैस्साचुस्टस में लड़ीं और इस तरह अमरीका की स्वतंत्रता का संघर्ष शुरु हो गया.

हालांकि फिलडैल्फिया में रहने वाले लोगों को लड़ाइयों के बारे में जानकारी थी फिर भी वह हमेशा की तरह अपने दैनिक कार्यों में व्यस्त रहे. बैट्सी और जॉन ने 1775 में एक दूकान खोली. अपनी दूकान चलाने के लिए वह दोनों देर तक काम करते.
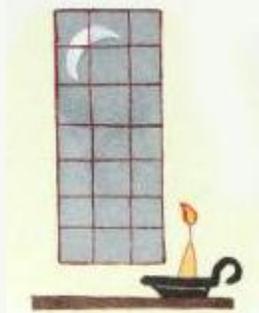
जॉन सेना में भर्ती हो गया. सन 1776 में एक रात वह बारुद से भरे हुए एक गोदाम की पहरेदारी कर रहा था कि बारुद में आग लग गई. महीनों तक बैट्सी ने जॉन की देखभाल की. जड़ी-बूटियों और घरेलू दवाइयों से उसका इलाज किया. लेकिन उसकी सेवा के बावजूद जॉन की मृत्यु हो गई.

बैट्सी विधवा हो गई और आर्च स्ट्रीट में स्थित अपनी दूकान को अब वह अकेले ही चलाती थी. दूकान का काम करने के बाद, क्वेकर तौर-तरीक़ों के विरुद्ध जाते हुए, सेना की सहायता करने के लिए वह बंदूक की गोलियाँ भी बनाती थी.

अमरीका की सेना के सेनापति, जनरल जॉर्ज वाशिंगटन, चाहते थे कि अमरीका का अपना एक झंडा होना चाहिए. यह झंडा न सिर्फ अमरीका की इंगलैंड से स्वतंत्रता का प्रतीक होगा, अपितु स्वतंत्रता संग्राम में उपनिवेशियों की एकता का भी प्रतीक होगा. उन्होंने स्वयं झंडे का एक नमूना बनाया और उसे अपने मित्रों, रॉबर्ट मौरिस और कर्नल जॉर्ज रॉस, को दिखाया. कर्नल रॉस ने, जो जॉन के चाचा थे, सुझाव दिया कि झंडा सिलने का काम बैट्सी को दिया जाए.

बैट्सी से मिलने के लिए तीनों व्यक्ति उसकी छोटी दूकान पर आए

जब जनरल वाशिंगटन ने झंडे का अपना नमूना बैट्सी का दिखाया तो नमूना देखकर उसकी त्योरी चढ़ गई.

“छह-नुकीले सितारे के बजाय पाँच-नुकीला क्यों न बनाया जाए?” उसने कहा. “पाँच-नुकीला सितारा बनाना सरल होता है और उसके बनाने में कपड़ा भी कम बरबाद होता है.”

तीनों लोगों ने संदेह से देखा तो बैट्सी ने कपड़े का एक टुकड़ा लिया, उसे मोड़ा और कैंची से एक बार काट कर एक पाँच-नुकीला सितारा बना दिया.

“और मेरा विचार है कि झंडा आयताकार होना चाहिए. चौकोर झंडे के बजाय ऐसा झंडा हवा में लहराता हुआ अधिक सुंदर लगेगा.” गजा

तीनों व्यक्ति बैट्सी के नमूने से बहुत प्रभावित हुए. वह सहमत थे कि उसका नमूना बेहतर था.

बैट्सी ने बड़े ध्यान से अमरीका का पहला झंडा बनाया. उसने तेरह सितारों को एक वृत्त के आकार में नीली पृष्ठभूमि पर सिल दिया. उसके सामने तेरह लाल और सफेद धारियाँ बना दीं.

4 जुलाई 1776 को स्वतंत्रता की घोषणा पत्र पर हस्ताक्षर किये गए. तेरह उपनिवेश बस्तियाँ यूनाइटिड स्टेट्स ऑफ अमेरिका के तेरह राज्य बन गईं.

14 जून 1777 के दिन, कांग्रेस की एक बैठक में बैट्सी का बनाया झंडा प्रस्तुत किया गया और एक प्रस्ताव पारित किया गया. उस बैठक के कार्य-विवर्ण में लिखा है:

“संकल्प लिया जाता है कि यूनाइटिड स्टेट्स के झंडे में बारी-बारी लाल और सफेद तेरह धारियाँ होंगी और नीली पृष्ठभूमि पर, एक नये तारामंडल को दर्शाते, तेरह सितारे होंगे.”

युद्ध के दौरान बैट्सी अपने सुंदर झंडों के लिए प्रसिद्ध हो गई. लेकिन एक सोफ़ासाज़ के रूप में भी उसकी ख्याति खूब फैली. उसे कई महत्वपूर्ण काम मिले. उसने बैंजामिन फ्रैंक्लिन, सोसाइटी ऑफ फ्री क्वेकर्स और पैनसिल्वैनिया के स्टेट हाउस के लिए काम किया.

1777 में बैट्सी ने जोसफ ऐशबर्न के साथ विवाह किया. जोसफ एक जहाज़ का कप्तान था और अकसर घर से बाहर रहता था. उसकी एक यात्रा के दौरान अंग्रेज़ सैनिकों ने फिलडैल्फिया पर कुछ महीनों के लिए कब्ज़ा कर लिया. कई लोग नगर छोड़ कर चले गए. लेकिन अपना व्यापार चलाने के लिए, अकेली होते हुए भी बैट्सी नगर में ही रही. इस दौरान कुछ अंग्रेज़ सैनिक उसके घर में पड़ाव डाल कर रहे. वह उनसे विनम्रता से व्यवहार करती पर उन्हें जता देती कि वह किस के साथ थी. अंग्रेज़ सैनिक उस अकेली, परिश्रमी औरत का सम्मान करने लगे और उसे “छोटी विद्रोही” कह कर बुलाते.

अंग्रेज़ी सेना के साथ एक समुद्री लड़ाई में जोसफ कैद कर लिया गया. युद्ध की समाप्ति पर 1782 में बैट्सी के एक मित्र, जॉन क्लेपूल, ने जानकारी दी कि अंग्रेज़ों की जेल में जोसफ की मृत्यु हो गई थी. इस बीच जोसफ और बैट्सी की पहली संतान, ज़िल्लाह, का देहांत हो गया था और दूसरी संतान, एलिज़ाबैथ, का जन्म हुआ था. जोसफ के देहांत के बाद बैट्सी फिर विधना हो गई.

जॉन क्लेपूल और बैट्सी की मित्रता गहरी हो गई. 1783 में दोनों ने विवाह कर लिया. जॉन उसका तीसरा पति था.

दोनों सोसाइटी ऑफ फ्री क्वेकर्स के सदस्य बन गए क्योंकि यह सोसाइटी लोगों को संप्रदाय के बाहर विवाह करने की अनुमति देती थी. बैट्सी फिर से चर्च जाकर प्रार्थना कर सकती थी.

जॉन और बैट्सी की पाँच संतानें हुईं: क्लैरिज़ा, सुसान्ह, रेचल, जेन, और हैरियट, जिसकी बाल्यकाल में ही मृत्यु हो गई थी.

हालांकि जॉन समुद्री यात्रायें करता था, लेकिन बैट्सी ने उससे कहा कि वह उसके फलते-फूलते व्यापार में उसका हाथ बंटाये. लेकिन सोफ़ासाज़ के काम से जॉन शीघ्र ही उकता गया और अमरीका के कस्टम्स हाउस में काम करने चला गया. जीवन के अंतिम दिनों में जॉन बीमार हो गया और 1817 में उसकी मृत्यु हो गई.

बैट्सी ने अपनी बेटियों, नातिनों और भतीजियों को सिलाई-कढ़ाई सिखाई. जब यह लड़कियाँ बड़ी हुईं तो व्यापार चलाने में बैट्सी की सहायता करने लगीं

पचहत्तर वर्ष की आयु में बैट्सी ने आखिरकार काम करना बंद कर दिया. उसकी आँखें कमज़ोर हो गई थीं. जब वह अँगीठी के पास बैठती तो उसकी कोई एक संतान बाइबल पढ़ कर उसे सुनाती. अपने जीवन की कहानियाँ बच्चों को सुनाना बैट्सी को अच्छा लगता था. उसकी प्रिय कहानी अमरीका का झंडा बनाने के विषय में थी.

बैट्सी की मृत्यु 1836 में हुई. जो लोग उसे जानते थे झंडा बनाने की उसकी कहानी सुनाते. आखिरकार, 1870 में उसके नवासे, विलियम कैन्बि, ने हिस्टोरिक्ल सोसाइटी ऑफ पैनसिल्वेनिया में भाषण देते समय बैट्सी की कहानी सार्वजनिक कर दी.

जिस घर से बैट्सी अपना व्यापार चलाती थी उस घर के बग़ीचे में उसे दफना दिया गया. उसकी कब्र पर हर दिन, चौबीस घंटे, युनाइटिड स्टेट्स का झंडा फहराता है.

लेखक का नोट

हमें बैट्सी रॉस के जीवन के विषय में कई बातें पता हैं लेकिन कुछ कहानियाँ परस्पर-विरोधी हैं. कुछ इतिहासकार मानते हैं कि बैट्सी ने सिलाई-कढ़ाई में कई मुकाबले जीते लेकिन दूसरे कहते हैं कि उसने नहीं जीते. कुछ इतिहासकारों का कहना है कि 1777 में अंग्रेज़ सैनिकों ने उसके घर में पड़ाव न डाला था, हालांकि उसकी ग्रैंडनीस सूसन न्यूपोर्ट ने सूचित किया था कि अंग्रेज़ उसके घर में रुके थे और उसे 'छोटी विद्रोही' बुलाते थे.

ऐसा कोई पक्का प्रमाण नहीं है कि बैट्सी रॉस ने अमरीका का पहला झंडा बनाया था. यह कहानी कि जॉर्ज वाशिंगटन ने बैट्सी रॉस को झंडा बनाने का काम सौंपा था, उसके मित्रों और संबंधियों ने फैलाई थी. हालांकि जॉर्ज वाशिंगटन, जॉर्ज रॉस और रॉबर्ट मौरिस उस समय फिलडैल्फिया में ही थे, जिस समय बैट्सी रॉस ने कहा थी कि वे तीनों उसके घर आए थे. सन 1963 में फिलडैल्फिया फ्लैग डे एसोसिएशन की एक लंच पार्टी में बैट्सी रॉस के एक मित्र, सैमुयल वैध्रिल, के वशंज, रीव्स वैध्रिल ने कागज़ का एक सितारा भेंट किया जिस पर बैट्सी रॉस की बेटी, क्लैरिज़ा के हस्ताक्षर थे. माँ की मृत्यु के बाद क्लैरिज़ा ही उसका व्यापार चलाती थी. उसी ने वह प्रसिद्ध सितारा सैमुयल वैध्रिल को दिया हो.

इस कहानी में उलेखित तथ्य रॉबर्ट मौरिस की किताब, 'द ट्रुथ अबाउट द बैट्सी रॉस स्टोरी' से लिए गए हैं.

समाप्त